एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 05, अंक: 04 (जुलाई-अगस्त, 2025)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

प्राकृतिक खेती, प्रमुख घटक, लाभ एवं विशेषताएँ

*अनिल कुमार पाल, अभिषेक यादव एवं संजीत कुमार
विषय वस्तु विशेषज्ञ (मृदा विज्ञान), कृषि विज्ञान केंद्र, बलिया (उत्तर प्रदेश),
आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या, उत्तर प्रदेश, भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: anilkumarpal500@gmail.com

प्राकृतिक खेती जिसे नेचुरल फार्मिंग के नाम से भी जाना जाता है, जिसका अर्थ मृदा में सूक्ष्म जीवों को बढ़ना है, जिससे मिट्टी की उर्वरता में सूक्ष्म जीवों का अग्रणी योगदान माना जाता है जिसको सूक्ष्म जीवों की खेती के नाम से संबोधित किया जाता है। यह एक ऐसी कृषि प्रणाली है जो रासायनिक उर्वरको और कीटनाशकों के उपयोग को कम करके प्रकृति अपने तरीको का उपयोग करती है इसका मुख्य उद्देश्य मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार करना, पर्यावरण को बचाना और किसानों की लागत को कम करना, प्राकृतिक खेती में किसान स्थानीय संसाधनों, जैसे देशी गाय के गोबर, गोमूत्र और पौधों के कचरे का उपयोग करते है, ताकि फसलों को पोषक तत्व प्रदान किया जा सके और कीटों और बीमारियों को नियंत्रित किया जा सके।

प्राकृतिक खेती के प्रमुख घटक

जीवामृत– पानी 180 लीटर, देशी गाय का गोबर 10 किलोग्राम, गोमूत्र 5–10 लीटर, गुण 1 से 1.5 किलोग्राम, बेसन 1 से 1.5 किलोग्राम, खेत या मेड़ की मिट्टी एक मुट्ठी।
विधि–उपरोक्त सामाग्रीयों को अच्छी तरह से 200 लीटर के प्लास्टिक ड्रम में घोल ले। घोल को सूई की दिशा मे 3–4 मिनट तक लाठी की सहायता से मिलाए इसके बाद प्लास्टिक ड्रम को जुट की बोरी से ढककर 72 घण्टे तक किसी छायादार स्थान पर सुरक्षित रख दे फिर यही क्रिया सुबह–शाम दो–दो मिनट तक घोले इसके बाद इस घोल का उपयोग 7 दिन के अंदर अपने फसलों में उपयोग करें।

घनजीवामृत–इसके लिए देशी गाय का गोबर 100 किलोग्राम, गुड 1 से 1.5 किलोग्राम, बेसन 1.5 से 2 किलोग्राम, खेत या मेड की मिट्टी एक मुट्ठी, देशी गाय का गोमुत्र आवश्यकतानुसार ।
विधि–इसके लिए देशी गाय का गोबर, गुड, बेसन व मिट्टी को अच्छी तरह से मिला ले इसके बाद आवश्यकतानुसार इसमें थोड़ा–थोड़ा गोमूत्र भी मिलाते रहना चाहिए जिससे घनजीवामृत को तैयार कने में आसानी रहें तथा इस मिश्रण को 2–3 दिन तक किसी छायादार स्थान पर सुखने के लिए रख दे। घनजीवामृत को अच्छी तरह से सूखने व बारीक करने के बाद खेत में इसका उपयोग अच्छी प्रकार से करें।

बीजामृत–इसके लिए देशी गाय का गोबर 5 किलोग्राम, देशी गाय का गोमूत्र 5 लीटर, चूना 25 ग्राम, खेत या मेड़ की मिट्टी एक मुट्ठी तथा पानी 20 लीटर।
विधि– उपरोक्त सामाग्री को तैयार करने के लिए एक 200 लीटर प्लास्टिक के ड्रम में घोल कर अच्छी तरह से मिला ले और घोल को 2–3 मिनट तक सूई की दिशा में लाठी की सहायता से घोल ले फिर इसके बाद बोरी से ढककर किसी छायादार स्थान पर रखकर सुरक्षित करें और सुबह–शाम दो–दो मिनट घोले, इस घोल को 24 घण्टे रखने के बाद 100 किलोग्राम बीज को उपचारित करें।

फसल सुरक्षा प्राकृतिक कीटरोधक

नीमास्त्र–नीम की हरी पत्तियां या सूखे फल 5 किलोग्राम, देशी गाय का मूत्र 5 लीटर, देशी गाय का गोबर 1 किलोग्राम, पानी 100 लीटर।
विधि–इसके लिए नीम की हरी पत्तियां या सूखे फलों को अच्छी प्रकार से कूट ले, कूटी हुये सामाग्री को पानी में मिलाये देशी गाय का मूत्र व तत्पश्चात गाय का गोबर मिला ले। मिश्रण को 48 घण्टे बोरी से ढककर किसी छायादार स्थान पर सुरक्षित रख दें। मिश्रण को सुबह–शाम लकड़ी की सहायता से घड़ी की दिशा में घोले इसके बाद 48 से 96 घण्टे बाद किसी सूती कपड़े से छानकर फसल पर छिडकाव करें।

ब्रह्मास्त्र–इसके लिए देशी गाय का मूत्र 10 लीटर, नीम के पत्ती 5 किलोग्राम, (नीम, आम, अमरूद, आरंडी के पत्तों की चटनी 2–2 किलोग्राम)।

विधि–उपरोक्त वानस्पतियों की चटनी को गोमूत्र में डालकर धीमी आँच पर एक उबाल आने तक गर्म करें। इसके बाद 48 घण्टे बाद ठण्डा होने के लिए सुरक्षित स्थान पर रख दें, तत्पश्चात 2.5 से 3 लीटर वाले घोल को 100 लीटर पानी में मिलाकर एक एकड की फसल पर छिड़काव करें।

अग्नि–अस्त्र–इसके लिए नीम के पत्ते 5 किलोग्राम, देशी गाय का मूत्र 20 लीटर, तम्बाकू पाउडर 500 ग्राम, तीखी हरी मिर्च की चटनी 500 ग्राम, देशी लहसून की चटनी 500 ग्राम।
विधि–कूटे हुये नीम के पत्तों, तम्बाकू पाउडर, मिर्च की चटनी व लहसून की चटनी को गोमूत्र में मिलाकर धीमी आँच पर उबाल लें।

उपरोक्त मिश्रण को 48 घण्टे के लिए सूरक्षित रख दे व इस मिश्रण को सुबह शाम लकड़ी के डण्डे की सहायता से घडी की दिशा के साथ घोले मिश्रण का 6–8 लीटर घोल 200 लीटर पानी में मिलाकर फसल पर छिड़काव करें। उक्त घोल को तीन महिने के अंदर इसका उपयोग कर लेना चाहिए।
प्राकृतिक खेती से लाभ–प्राकृतिक खेती से बेहतर मिट्टी स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण, और किसानों की आय मे वृद्धि, रसायनों के उपयोग को कम करता है जिससे बेहतर स्वास्थ्य और अधिक पौष्टिक भोजन मिलता है इससे निम्नलिखित लाभ हैं–

- प्राकृतिक खेती, मिट्टी की उर्वरता और जलधारण क्षमता को बढ़ाती है जिससे मिट्टी के स्वास्थ्य में बेहतर सुधार होता है।
- यह रसायनिक उर्वरकों और कीटनाशको के उपयोग को कम करके पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाता है। साथ ही साथ मृदा एवं जल संरक्षण में मदद करता है।
- प्राकृतिक खेती लागत को कम करती है और पैदावार को बढ़ाती है एवं किसानों को अधिक आय प्राप्त करने में मददगार सिद्ध होती है।
- प्राकृतिक रूप से उगाये गये भोजन में पोषक तत्वों की मात्रा अधिक होती है और यह रसायनों से मुक्त रहती है जिससे मनुष्य का स्वास्थ्य बेहतर होता है।
- प्राकृतिक खेती में विविध फसले उगायी जाती है। जो जैव विविधता को बढ़ावा देती है।
- प्राकृतिक खेती में बाहरी आदानों (जैसे रासायनिक उर्वरक, कीटनाशक) की आवश्कता कम होती है, जिससे किसानों के लागत कम होती हैं।
- बेहतर मिट्टी स्वास्थ्य के कारण, प्राकृतिक खेती में सिचाई की आवश्यकता कम होती है जिससे पानी की खपत कम होती है।
- प्राकृतिक खेती में अधिक श्रम की आवश्यकता होती है। जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर सृजन होते है।
- प्राकृतिक खेती मिट्टी में कार्बन को जमा करती है। जिससे ग्रीनहाउस गैंस का उत्सर्जन कम होता है और जलवायु परिवर्तन के लचीलापन को बढ़ता है।
- प्राकृतिक रूप से उगाये गये भोजन में पोषक तत्वों की मात्रा अधिक होती है जो स्वास्थ्य के लिए बेहतर होता है।
- प्राकृतिक खेती एक टिकाऊ और पर्यावरण के अनुकूल कृषि पद्धति है जो किसानों और उपभोक्ताओं दोनो के लिए फायदे मन्द है।

प्राकृतिक खेती की विशेषताएँ– यह रसायनिक उर्वरको, कीटनाशकों और खरपतवार नाशकों के उपयोग से बचती है और इसके बजाय प्राकृतिक तरिको पर निर्भर करती है। यह विभिन्न प्रकार की फसलों को बढ़वा देती है। स्थानीय संसाधनों का उपयोग करती है और मिट्टी के स्वास्थय जैवविविधता को बेहतर बनाने में केन्द्रित होती है। इसकी विशेषताएँ मुख्यतः निम्नवत है–

- प्राकृतिक खेती में रसायनिक उर्वरको, कीटनाशकों और खरपतवार नाशको का उपयोग नहीं किया जाता है। इसके अतिरिक्त किसान प्राकृतिक तरिको से जैसे जैविक खाद, हरी खाद और फसल चक्र का उपयोग करते है।
- प्राकृतिक खेती में गाय का गोबर गोवमूत्र और फसल अवशेषो को खाद के रूप में उपयोग किया जाता है।
- प्राकृतिक खेती में एक ही फसल को उगाने के बजाय विभिन्न प्रकार की फसले उगाई जाती है। जिससे मृदा की उर्वरता बरकरार रहती हैं और कीटो से होने वाली बीमारीयों का खतरा कम हो जाता है।
- प्राकृतिक खेती मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार करती है क्योंकि यह जैविक पदार्थो को बढ़ती है और मिट्टी की संरचना में सुधार करती है।
- प्राकृतिक खेती से किसानो के आय में वृद्धि हो सकती है, क्योंकि इसमें कम लागत आती है और ऊपज की गुणवत्ता में सुधार होता है।